ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 100-103**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले आध्यात्मिक धारावाहिकों का महिलाओं पर प्रभाव (महाविद्यालय की शिक्षिकाओं पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

1. डॉ0 प्रतिमा सिंह
2. डॉ0 कनक लता सिंह

1. असिस्टेंट प्रोफेसर, 2. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली (उ0प्र0) भारत

Received-30.05.2025, Revised-09.06.2025, Accepted-17.06.2025 E-mail : me.pratibha@gmail.com

सारांशः ***दूरदर्शन एक प्रभावशाली और सशक्त माध्यम है, जो समाज की सोच, धारणाओं और आदतों को प्रभावित करता है। विशेष रूप से आध्यात्मिक धारावाहिकों का प्रभाव गहरा होता है, क्योंकि वे मानसिक और भावनात्मक स्तर पर कार्य करते हैं। भारतीय समाज में आध्यात्मिकता का विशेष महत्व है, और जब ये धारावाहिक प्रसारित होते हैं, तो उनका प्रभाव समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर महिलाओं, पर महत्वपूर्ण रूप से पड़ता है। ये धारावाहिक महिलाओं को धार्मिक शिक्षा, आत्मनिर्भरता, और मानसिक शांति प्रदान करने के साथ–साथ उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाते हैं। यह शोध यह समझने का प्रयास करता है कि आध्यात्मिक धारावाहिक महिलाओं के मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। इस शोध में विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े साक्षात्कार विधि से संकलित किए गए, जबकि द्वितीयक आंकड़ों के लिए विभिन्न धार्मिक पुस्तकों, शोध पत्रों, पत्रिकाओं और इंटरनेट स्रोतों का भी प्रयोग किया गया है। शोध का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के बरेली जिले को चुना गया, जहाँ 29 शिक्षिकाओं के अनुभवों को साक्षात्कार के माध्यम से संकलित किया गया। शोध से ज्ञात हुआ कि दूरदर्शन ने उच्च और निम्न दोनों वर्गों की महिलाओं को आध्यात्मिक धारावाहिकों की ओर आकर्षित किया है। 51.72 प्रतिशत महिलाओं ने रामायण, 13.79 प्रतिशत ने महाभारत, और 10.34 प्रतिशत ने श्रीकृष्णा को सबसे अधिक पसंद किया। अध्ययन में 75.86 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि इन धारावाहिकों से आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, जबकि 86.21 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि इनसे नैतिक मूल्यों में वृद्धि होती है। शोध से स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक धारावाहिक न केवल मानसिक तनाव कम करने में सहायक हैं, बल्कि ये महिलाओं के आत्मविश्वास, व्यक्तित्व विकास और धार्मिक सोच को भी मजबूत करते हैं।***

कुंजीभूत शब्द–दूरदर्शन, सशक्त माध्यम, मानसिक और भावनात्मक स्तर धार्मिक शिक्षा, मानसिक शांति, अध्यात्मिकता ।

भूमिका – दूरदर्शन, एक प्रभावशाली और सशक्त माध्यम है। यह समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यह न केवल सूचना का प्रसार करता है, बल्कि समाज की सोच, धारणाओं और आदतों को भी आकार देता है। विशेष रूप से आध्यात्मिक धारावाहिकों का प्रभाव गहरा और व्यापक होता है, क्योंकि वे व्यक्ति के मानसिक और भावनात्मक स्तर को प्रभावित करते हैं। भारतीय समाज में आध्यात्मिकता का विशेष महत्व है, और जब ये धारावाहिक टीवी पर प्रसारित होते हैं, तो उनका प्रभाव समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर महिलाओं, पर अलग–अलग रूपों में प्रकट होता है।

भारत आध्यात्मिकता पर आधारित देश रहा है और यहाँ आरम्भ से ही लोगों की आध्यात्मिक चेतना काफी प्रबल रही है यहाँ सगुण मार्गियों में कई देवताओं और देवियों के लिए आस्था और निष्ठा के भाव है, भक्तिकाल में राम और कृष्ण के चरित्र ने भारतीय जनमानस को काफी प्रभावित किया, उनके आदर्श व्यक्तित्व ने लोगों कों आकर्षित किया। कहीं कही वात्सल्य और श्रृंगार से युक्त इनकी लीलाओं से लोग अधिक प्रभावित होते हैं। भारतीय महिलाएं पारंपरिक रूप से धर्म और आध्यात्मिकता से गहरी जुड़ी हुयी हैं। घर–परिवार, पूजा–पाठ, और धार्मिक आयोजनों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। लेकिन आधुनिकता के दौर में जब महिला का सामाजिक और पेशेवर जीवन भी बदल रहा है, तब टीवी पर प्रसारित होने वाले आध्यात्मिक धारावाहिकों का उनकी सोच और जीवनशैली पर एक नया प्रभाव देखने को मिलता है। इन धारावाहिकों के माध्यम से महिलाएं न केवल धार्मिक शिक्षा प्राप्त करती हैं, बल्कि आध्यात्मिक जीवन और आत्मनिर्भरता के बारे में भी सीखती हैं। यही कारण है कि *'रामायण'*, *'महाभारत'*, *'श्री कृष्णा'* आदि धारावाहिक बने। *'रामायण'* और *'महाभारत'* ने तो लोकप्रियता के सारे रिकार्ड तोड़ दिए। आध्यात्मिकता लोगों द्वारा किये जाने वाले कई निर्णयों को प्रभावित करती है। यह लोगों को खुद के साथ दूसरों के साथ और अज्ञात के साथ बेहतर संबध बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। आध्यात्मिकता लोगों कों शांति और क्षमा की भावना पैदा करके मानसिक तनाव को दूर करने में मदद करती है। आध्यात्मिकता लोगों को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करती है। आध्यात्मिकता आपका विश्वास या उद्देश्य और अर्थ की भावना है, जो आपको अपने जीवन में मूल्य या महत्व का एहसास कराता है।[1]

वर्तमान समय में दूरदर्शन चौनलों पर धारावाहिकों की एक होड़ सी लगी हुई है। इनमें से अधिकांश धारावाहिक महिलाओं से जुड़े ज्वलंत मुद्दों को केंद्रित करके प्रस्तुत किए जाते हैं। हालांकि, इस तेज़–रफ्तार जीवन में कुछ महिलाएं आध्यात्मिक धारावाहिकों के माध्यम से मानसिक शांति प्राप्त कर रही हैं और स्वस्थ मनोरंजन की ओर बढ़ रही हैं। आध्यात्मिक धारावाहिकों का उदय विशेष रूप से 1987 और 1988 में हुआ, जब रामानन्द सागर और वी.आर. चौपड़ा ने रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों को दूरदर्शन पर प्रस्तुत किया। इन धारावाहिकों ने दर्शकों के बीच आध्यात्मिकता और धार्मिक विचारों के प्रति जागरूकता पैदा की।

इसके बाद अन्य धार्मिक धारावाहिकों जैसे– जय हनुमान, जय श्री कृष्णा, साईंबाबा, शिवपुराण आदि की बाढ़ सी आ गई। इन धारावाहिकों ने दर्शकों, खासकर महिलाओं, को दूरदर्शन के प्रति आकर्षित किया और उनके जीवन में धार्मिकता और आध्यात्मिकता के महत्व को उजागर किया। संचार माध्यमों के विस्तार के साथ, दूरदर्शन ने हर वर्ग के दर्शकों के बीच आध्यात्मिक धारावाहिकों का प्रचलन बढ़ाया। पहले यह धारावाहिक केवल अधिक उम्र के लोग ही देखते थे, लेकिन कोरोना काल के दौरान जब मानसिक अस्थिरता बढ़ी, तब इन धारावाहिकों ने समाज के बड़े हिस्से को मानसिक शांति और संतुष्टि प्रदान की।

कोरोना महामारी के बाद की दुनिया में, दीपिका चिकालिया टोपीवाला का यह कथन ध्यान आकर्षित करता है कि 'भारतीय समाज आध्यात्मिकता की ओर झुकेगा'। वह मानती हैं की इस महामारी का असर ये होगा कि भारतीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा प्रकृति और आध्यात्मिकता की ओर जायेगा। इस समय में आध्यात्मिक धारावाहिकों ने महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि की और उन्हें जीवन के कठिन समय में भी संघर्ष करने की प्रेरणा दी। इन धारावाहिकों में दिखाए गए सकारात्मक और संघर्षशील किरदारों ने महिलाओं में आत्मविश्वास और अपनी पहचान बनाने की इच्छा को जन्म दिया।

यह शोध यह समझने का प्रयास करता है कि दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले आध्यात्मिक धारावाहिक भारतीय महिलाओं के जीवन पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं। क्या ये धारावाहिक महिलाओं के मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को प्रभावित

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

करते हैं? क्या इनमें प्रस्तुत धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों से महिलाओं में आंतरिक शांति, आत्मविश्वास, और सकारात्मक सोच का विकास होता है? इस शोध का उद्देश्य यह जानना है कि ये धारावाहिक महिलाओं के जीवन के वास्तविक पहलुओं को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। समाज में उनकी भूमिका, पहचान और मानसिक विकास पर क्या प्रभाव डालते हैं।

साहित्यिक पुनरावलोकन– दूरदर्शन, विशेष रूप से आध्यात्मिक धारावाहिक, महिलाओं के सामाजिक, मानसिक, और सांस्कृतिक विकास को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रियंका (2015)[2] के अनुसार, दूरदर्शन महिलाओं की सामाजिक स्थिति, आत्मनिर्भरता, धार्मिक सोच और पारिवारिक मूल्यों को प्रभावित करता है। साथ ही दूरदर्शन महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करता है। इस शोध से पता चलता है कि दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम महिलाओं में शिक्षा, लैंगिक समानता, और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ावा देते हैं। आध्यात्मिक धारावाहिकों जैसे रामायण, महाभारत, सिया के राम आदि ने भारतीय समाज में महिलाओं की धार्मिक समझ को विकसित करने में योगदान दिया है। विनोद सावंत एवं डॉ. शाहिद अली (2016)[3] द्वारा किये एक अध्ययन के अनुसार, 97 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि इन धारावाहिकों से उनकी धार्मिक समझ में वृद्धि हुई। इसके अलावा, 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि इन कार्यक्रमों ने भारतीय संस्कृति को समझने में मदद की। आध्यात्मिक धारावाहिकों के प्रभाव पर किए गए इस अध्ययन में पाया गया कि ये कार्यक्रम महिलाओं को नैतिकता, स्वास्थ्य, जीवनशैली और पारिवारिक मूल्यों से जोड़ते हैं। दीपक कुमार कन्नौजिया (2024)[4] ने अपने शोध में पाया कि दूरदर्शन महिलाओं को पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों में संतुलन सिखाने में सहायक रहा है। विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं में, इन धारावाहिकों के माध्यम से उनकी शिक्षा और आत्मनिर्भरता के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

त्रिपाठी (2007)[5] ने अपने शोध पत्र में भारतीय सामाजिक आर्थिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण के आधार पर मानव के विकास कों उत्कर्ष पर ले जाने की प्रक्रिया स्पष्ट की है इनके अनुसार व्यक्तित्व के ज्ञानात्मक एवं भावात्मक विकास के लिए आध्यात्मिक दृष्टिकोण का विस्तृत एवं संपूर्ण होना आवश्यक है। दत्ता (2008)[6] ने आध्यात्मिकता कों एक वर्तमान जीवन शैली का प्रभावपूर्ण माध्यम स्वीकार किया है। इन्होने कार्पोरेट जगत में आध्यात्म की शक्ति कों औषधि के रूप में बताते हुए विभिन्न नकारात्मक कारकों कों दूर करने में आध्यात्मिकता का प्रभाव स्पष्ट किया है। शर्मा (2008)[7] ने वर्तमान संगठनात्मक व्यवस्था में मूल्यों के विकास हेतु नीतिशास्त्रीय पक्ष तथा आध्यात्मिकता की भूमिका समझाते हुए स्पष्ट किया है कि आधुनिक प्रबंधकीय व्यवस्थाओ में मानवीय तत्वों कों प्रभावशाली बनाने के लिए व्यक्ति में नैतिकता,उच्च मानवीय मूल्यों एवं आध्यात्मिकता का होना आवश्यक है ।

जैन एवं पुरोहित (2009)[8] ने वृधाश्रम में रहने वाले वृद्धजनों तथा परिवार में रहने वाले वृद्धजनो पर एक अध्ययन किया तथा संबंधो कों पोषित करने के लिए जीवन में आशावादिता तथा सहायता करने की भावना का विकास परिवार में ही होता है । परिवार के साथ रहने से संतुष्टि एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है इन्होने अपने शोध कार्य में यह भी स्पष्ट किया कि आध्यात्मिक बुद्धि अनुभव एवं ज्ञान से अर्जित की जा सकती है यह हमें जीवन में श्रेष्ठता की ओर ले जाती है। शर्मा (2010)[9] ने अपने शोध परख लेख में आध्यात्मिक प्रदशर्न की व्याख्या विस्तार से की है। भारतीय चिंतन धारणा का उल्लेख करते हुए इन्होने पवित्रता के लिए विचार वाणी एवं कार्य कर्म के पक्षों कों महत्वपूर्ण बताया है, व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में संस्कारों कों महत्वपूर्ण बताया गया है। दुःखों की विस्तार से व्याख्या की गयी है, आध्यात्मिक आदर्शों के सोपानो कों चित्र रूप में समझाया गया है ।

अध्ययन का उद्देश्य–

1. यह पता लगाना है की यह धारावाहिक किस तरह से महिलाओ के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं।
2. आध्यात्मिक धारावाहिकों में कौन सा धारावाहिक सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है।
3. आध्यात्मिक धारावाहिकों का महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पनाएं–

1. महिलाओं का आज भी हमारे समाज में धर्म और आस्था से जुड़ाव है।
2. धर्म और आस्था के प्रति विश्वास ही आध्यात्मिक धारावाहिकों कों बढ़ावा देते हैं।
3. अपने मानसिक तनाव कों दूर करने के लिए भी इस तरह के धारावाहिक को देखा जाता हैं।
4. आध्यात्मिक धारावाहिकों से महिलाओं के आत्म–विश्वाश में वृद्धि होती है।

शोध पद्धति– प्रस्तुत शोध पत्र में विश्लेष्णात्मक व वर्णात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसमे प्राथमिक व द्वितीयक शोध के निर्धारित उद्देश्यों कों प्राप्त करने के लिए प्रश्न तैयार किये गए है प्रश्नों को साक्षत्कार अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक तथ्यों कों संकलित किया गया, द्वैतीयक आकड़ों कों प्राप्त करने के लिए विषय से सम्बन्धित विभिन्न धार्मिक पुस्तकों शोध पत्रों,पत्रिकाओं की सहायता ली गयी है।साथ ही इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री का भी प्रयोग किया गया है।

अध्यन का क्षेत्र– प्रस्तुत अध्यन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश का बरेली जिला है,उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के आधार पर बरेली के विभिन्न महाविद्यालयों में कार्यरत 29 शिक्षिकाओं का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में उन्ही शिक्षिकाओं कों सम्मिलित किया गया है जो साक्षात्कार अनुसूची से अपने अनुभवों कों साक्षा करने के लिए तैयार थीं।

साक्षात्कार अनुसूची में शामिल प्रश्नों की व्याख्या आगे ग्राफ एवं सारणी में आंकड़ों के माध्यम से प्रस्तुत की जा रही है।

ग्राफ संख्याः 1 से 4

उत्तरदातियों की आयु, जाति वैवाहिक एवं शैक्षिक विवरण

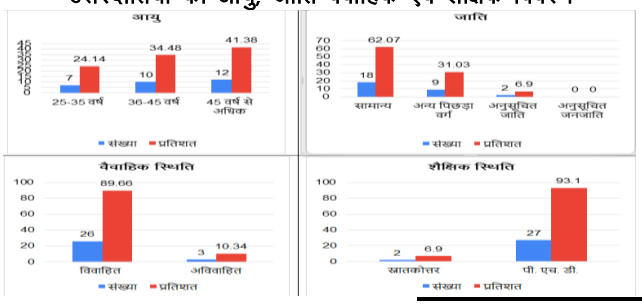

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 25–35 वर्ष की शिक्षिकाओं का प्रतिशत 24.14 है, तथा 36 –45 वर्ष की कुल शिक्षिकाओं का प्रतिशत 34.48 है, और 45 वर्ष से अधिक की कुल शिक्षिकाओं का प्रतिशत 41.38 है। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि 45 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं का प्रतिशत आध्यात्मिक धारावाहिक देखने में सबसे अधिक है। अध्ययन में सम्मिलित शिक्षिकाओं की जातिगत स्थिति का अध्ययन करने पर यह विदित होता है कि 62.07 प्रतिशत उत्तरदातियाँ सामान्य जाति की तथा 31.03 प्रतिशत उत्तरदातियाँ अन्य पिछड़े वर्ग की तथा 6.90 प्रतिशत अनुसूचित जाति की हैं सारांशतः यह ज्ञात होता है कि सामान्य जाति की उत्तरदातियाँ सबसे अधिक हैं। तथ्यों कों देखने से विदित होता है कि 89.66 प्रतिशत विवाहित है 10.34 प्रतिशत अविवाहित है। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि अध्यात्मिक धारावाहिकों को देखने में विवाहित उत्तरदातियों की संख्या सबसे अधिक है। अध्ययन में सम्मिलित शिक्षित महिलाओं में 6.9 प्रतिशत स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्राप्त की हैं तथा 93.10 प्रतिशत पी.एच. डी की डिग्री प्राप्त की हैं।

सारणी संख्याः 1
उत्तरदातियों की आर्थिक स्थिति

परिवार की मासिक आय	संख्या	प्रतिशत
100000 से कम	6	20.69
100000 से 200000	14	48.28
200000 से अधिक	9	31.03
योग	29	100.00

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 48.28 प्रतिशत उत्तरदातियों की मासिक आय 100000 से 200000 के बीच है तथा 31. 03 प्रतिशत उत्तरदातियों की मासिक आय 200000 से अधिक हैं एवं 20.69 प्रतिशत उत्तरदातियों की मासिक आय 100000से कम है।

सारणी संख्याः 2
अधिकांशतः देखे जाने वाले आध्यात्मिक धारावाहिक का नाम/स्वरूप

क्र. सं.	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1	जय श्री कृष्णा	3	10.34
2	महाभारत	4	13.79
3	रामायण	15	51.72
4	अन्य	7	24.14

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 10.34 प्रतिशत शिक्षिकाएं जय श्री कृष्णा 13.79 प्रतिशत महाभारत 51.72 प्रतिशत रामायण एवं 24.14 प्रतिशत उत्तरदातियाँ अन्य आध्यात्मिक धारावाहिक देखती है। सारांशतः यह कह सकते हैं कि आज भी अधिकांशतः उत्तरदातियों की रूचि रामायण देखने में है।

सारणी संख्याः 3
आध्यात्मिक धारावाहिक देखने में दिया गया समय

विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1 घंटे से कम	7	24.14
1–2 घंटे	20	68.97
2 घंटे से अधिक	2	6.90
योग	29	100.00

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 24.14 प्रतिशत उत्तरदातियाँ प्रतिदिन 1 घंटे से कम आध्यात्मिक धारावाहिक देखती है। तथा 68.97 प्रतिशत उत्तरदातियाँ प्रतिदिन 1–2 घंटे देखती है तथा 6.90 प्रतिशत उत्तरदातियाँ 2 घंटे से अधिक आध्यात्मिक धारावाहिक देखती हैं। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि शोध में चयनित सभी उत्तरदातियाँ आध्यात्मिक धारावाहिकों के लिए समय देती हैं ।

सारणी संख्याः 4 आध्यात्मिक धारावाहिकों से जीवन में परिवर्तन

क्र. सं.	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1	व्यवहार सम्बन्धी	8	27.59
2	जीवन जीने के तरीकों में परिवर्तन संबधी	14	48.28
3	कोई परिवर्तन नहीं होता है	7	24.14
	योग	29	100

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है की 27.59 प्रतिशत उत्तरदातियाँ **यह मानती है कि** आध्यात्मिक धारावाहिक देखने से व्यवहारसम्बन्धी परिवर्तन होता है। तथा 48.28 प्रतिशत उत्तरदातियाँ यह मानती है कि आध्यात्मिक धारावाहिक देखने से जीवन जीने के तरीकों में परिवर्तन होता है, तथा 24.14 प्रतिशत उत्तरदातियों का कहना है कि आध्यात्मिक धारावाहिक देखने से कोई परिवर्तन नहीं होता है वे सिर्फ मनोरंजन के लिए देखती हैं। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि 48.28 प्रतिशत उत्तरदातियाँ यह मानती हैं कि आध्यात्मिक धारावाहिक देखने से जीवन जीने के तरीकों में परिवर्तन होता है।

सारणी संख्याः 5 आध्यात्मिक धारावाहिक देखने से लाभ

क्र. सं.	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1	ज्ञान में बढ़ोतरी होती है	15	51.72
2	मन शांत रहता है	10	34.48
	योग	29	100.00

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 51.72 प्रतिशत उत्तरदातियाँ यह मानती है कि आध्यात्मिक धारावाहिक देखने से ज्ञान में बढ़ोतरी संबधी लाभ होता है। तथा 34.48 प्रतिशत उत्तरदातियों का विश्वास है कि आध्यात्मिक धारावाहिक देखने से मान शांत रहता है सारांशतः यह कहा जा सकता है कि 51.72 प्रतिशत उत्तरदातियों कों आध्यात्मिक धारावाहिक देखने से अध्यात्म से सम्बंधित ज्ञान में बृद्धि होती है ।

सारणी संख्याः 6 आध्यात्मिक धारावाहिकों की भारतीय संस्कृति कों बढ़ावा देने में भूमिका

क्र. सं.	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1	बहुत अधिक है	12	41.38
2	अधिक है	10	34.48
3	कम है	7	24.14
	योग	29	100

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि 41.38 प्रतिशत उत्तरदातियों का कहना है कि भारतीय संस्कृति कों बढ़ावा देने में आध्यात्मिक धारावाहिकों का बहुत बड़ा योगदान है। 34.48 प्रतिशत उत्तरदातियों का कहना है कि आध्यात्मिक धारावाहिक हमारी भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका अदा करती है। 24.14 प्रतिशत उत्तरदातियाँ यह कहती है कि आध्यात्मिक धारावाहिक भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने में बहुत कम भूमिका अदा करती हैं। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि अधिकांश उत्तरदातियाँ यह मानती है कि हमारी संस्कृति कों बढ़ावा देने में आध्यात्मिक धारावाहिकों की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

सारणी संख्याः 7

महाविद्यालय की शिक्षिकाओं की दृष्टि में आध्यात्मिक धारावाहिकों का मानव के व्यक्तित्व विकास में भूमिका

प्रश्न	उत्तर					
	हाँ		नहीं		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
आत्मविश्वास में वृद्धि होती है ?	22	75.86	07	24.14	29	100
नैतिक मूल्यों कों वृद्धि होती है ?	25	86.21	04	13.79	29	100
व्यक्तित्व विकास में भूमिका है ?	22	75.86	07	24.14	29	100
आध्यात्मिक धारावाहिकों से जीवन में परिवर्तन होता है?	22	75.86	07	24.14	29	100

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 86.21 प्रतिशत उत्तरदातियों का विश्वास है कि आध्यात्मिक धारावाहिकों से नैतिक मूल्यों में वृद्धि होती है जबकि 13.79 प्रतिशत उत्तरदातियों का कहना है कि आध्यात्मिक धारावाहिकों से नैतिक मूल्यों में कोई वृद्धि नहीं होती है । 75.86 प्रतिशत उत्तरदातियों का मानना है कि आध्यात्मिक धारावाहिकों से आत्मविश्वास में वृद्धि होती है जबकि 24.14 प्रतिशत उत्तरदातियों का मानना है कि इससे आत्मविश्वास में कोई वृद्धि नहीं होती। 75.86 प्रतिशत उत्तरदातियों का कहना है कि आध्यात्मिक धारावाहिक मानव के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है जबकि 24.14 प्रतिशत उत्तरदातियों का विश्वास है कि आध्यात्मिक धारावाहिक मानव के व्यक्तित्व विकास में कोई भूमिका नहीं निभाते है । सारांशतः यह कहा जा सकता है कि अधिकतर सभी शिक्षिकाएं आध्यात्मिक धारावाहिकों कों मानवीय व्यक्तित्व विकास के लिए महत्वपूर्ण मानती हैं ।

निष्कर्ष–प्रस्तुत शोध (आलेख) का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि संचार मीडिया के बढ़ने से दूरदर्शन ने हर घर में उच्च तबके से लेकर निम्न तबके तक के लोगों में आध्यात्मिक धारावाहिकों की तरफ रुझान बढाया है। दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले आध्यात्मिक धारावाहिक व्यक्ति को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने के साथ ही मानसिक तनावों से मुक्त रखते है जिससे व्यक्ति दैनिक जीवन में सयंमित व्यवहार करता है जिससे सामाज संगठित और व्यवस्थित रहता है। आध्यात्मिक धारावाहिकों कों समय के साथ–साथ और भी रुचिकर बनाया जा रहा है जिससे लोगों का ज्ञानवर्धन के साथ साथ मनोरंजन भी हो रहा है। इस समय सिया के राम सबसे अधिक देखे जाने वाले आध्यात्मिक धारावाहिकों में से एक है। इससे यह पता चलता है कि वर्तमान में आध्यात्मिक धारावाहिकों कों देखने वाले लोगों कि संख्या में बढ़ोतरी हुई है। अतः इस शोध–पत्र से यह पता चल रहा है कि बड़े लोगों के साथ–साथ बच्चे और युवा पीढ़ी भी आध्यात्मिक धारावाहिकों के प्रति आकर्षित होने लगे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- https://egyankosh.ac.in
2. प्रियंका (2015) – दूरदर्शन एवं महिला सशक्तिकरण, भारतीय भाषाओं कि अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका।
3. विनोद सावंत एवं डॉ. शाहिद अली (2016) – "सिया के राम दूरदर्शन धारावाहिक का विश्लेषणात्मक अध्ययन" Indian Streams Research Journal।
4. दीपक कुमार कन्नौजिया (2024) – महिलाओं पर मीडिया और सिनेमा के प्रभावरू एक समाजशास्त्रीय अध्ययन केंद्रीय विश्वविद्यालय दक्षिण बिहार, गया (बिहार) ।
5. त्रिपाठी (2007): प्रसूट ऑफ हुमैन एक्सलैन्स एण्ड इण्डियन साइको–स्प्रिचुअल इनसाइट्स, डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.साइकोलॉजी ऑफ वैल विइंग।
6. दत्ता (2008): स्प्रिचुअलटी मेडिसिनल ऑफ मॉर्डन कॉरपोरेट वर्ल्ड, डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू. एआईएमएसइन्टरनेशनल. ओआरजी/एआइसीआइएम/प्रोग्राम/20बुलेटिन 11–43पीडीएफ.
7. शर्मा, मंजरी (2008): ''रोल ऑफ इथिक्स, स्प्रिचुअल एण्ड हूमैन वैल्यू इन मॉर्डन ऑगेनाइजेशन'', डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू. एम्सइन्टरनेशनलओआरजी/एआईसीआईएम/ प्रोग्राम
8. जैन मधु एवं पुरोहित प्रेमा (2006): स्प्रिचुअल इण्टेलीजेन्सरू ए कन्टेम्प्रेररी कर्नसन विथ रिगार्ड टू लिविंग स्टेट्स ऑफ द सीनियर सीटीजन, जर्नल ऑफ द इण्डियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइक्लॉजी, जुलाई, 2006, वॉल्यूम 32, नं. 3, 227–233
9. शर्मा, आशा (2010) ''उच्च शिक्षा एवं आध्यात्मिक प्रदर्श'', भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वॉल्यूम 29, नं. 1, जनवरी–जून 2010, पेज– 54–63

*****